कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
(सहकारिता प्रभाग)

सहकार संवाद

मई-जून 2022 अंक-05, वर्ष-02 (मासिक)

हुनर कारीगारों का व्यवसायीकरण – "कुसुम इम्पोरियम"

राष्ट्रीय स्तर पर हस्तशिल्पकारों एवं बुनकरों द्वारा निर्मित उत्पादों की माँग में अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिवर्ष अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। Export Promotion Council for Handicraft (EPCH) नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित आँकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 16 हजार करोड़ रूपये का एक्सपोर्ट किया जाता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में स्वरोजगार का सृजन बड़े पैमाने पर होता है। ग्रामीण स्तर पर छोटे–छोटे समूह द्वारा निर्मित हस्तशिल्प उत्पादों की माँग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में नियमित रूप से की जाती है जिससे इन ग्रामीणों के जीविकोपार्जन के वैकल्पिक साधन के रूप में विकसित हो रही है।

झारखंड राज्य में शहर के साथ साथ ग्रामीण स्तर पर हस्तशिल्प एवं बुनकर के क्षेत्र में हुनर कारीगारों का छोटे छोटे समूह संगठित होकर स्थानीय बाजार में बिक्री कर जीविकोपार्जन कर रहे हैं लेकिन इनके उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बाजार की माँग के अनुरूप पैकेजिंग एवं ब्रान्डिग कर ऑनलाईन/ऑफलाईन लाभप्रद बाजार देने की आवश्यकता है। झारखंड राज्य में हैण्डलूम टेक्सटाईल्स के साथ साथ अन्य हस्तशिल्प डोकराक्राफ्ट, उडेनक्राफ्ट, जूटक्राफ्ट, लाह हस्तशिल्प, बाँस हस्तशिल्प, टेराकोटा, ट्राईबल्स पेन्टिंग, मेटलक्राफ्ट इत्यादि उत्पादों का व्यवसायिकरण किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त झारखंड राज्य में छोटे छोटे महिला समूहों द्वारा ऑर्गेनिक फूड यथा– आँवला, ईमली, मधु, चिरौंजी, आचार, मसाला, तेल, दर्दनाशक तेल, हर्बल ब्यूटी आदि उत्पादों की भी बिक्री हो रही है।

झास्कोलैम्पफ द्वारा संचालित कुसुम इम्पोरियम अपने स्थापना काल (वर्ष 2014) से लगातार राज्य के हुनरमंद कारीगारों द्वारा उत्पादित सामग्रियों को लाभप्रद बाजार उपलब्ध कराने हेतु माननीय प्रधानमंत्री द्वारा उदघोषित "भोकल फॉर लोकल" को सशक्त करने का एक सार्थक प्रयास किया जा रहा है।

कुसुम इम्पोरियम पुरूलिया रोड में राज्य के बुनकरों, हस्तशिल्पकारों, कारीगरों इत्यादि द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री हेतु राज्य का एक मात्र विपणन केन्द्र है जहाँ हैण्डलूम, डोकरा क्राप्ट, बाँस क्राप्ट, लाह चुड़ी व अन्य हस्तशिल्प, उडेन क्राप्ट, जूट क्राप्ट, माटीकला, पीतल व कांसा का बर्तन, हस्तशिल्प ज्वेलरी, बटन लाह, लैक सीलिंग स्टीक, मधु, ईमली, चिरौजी, जामुन, आवला, बहेरा, आचार, चिरैता के साथ विकास भारती, ट्राईफेड एवं पलास मार्ट द्वारा उत्पादित विभिन्न ऑर्गेनिक खादय सामग्रियों का ऑनलाईन/ऑफलाईन मार्केटिंग की जा रही है। कुसुम इम्पोरियम द्वारा समय समय पर त्योहारों एवं महोत्सव के अवसर पर राँची के विभिन्न क्षेत्रों के अपार्टमेंट एवं प्रमुख स्थलों में विभिन्न उत्पादों की बिक्री सह प्रदर्शनी की जाती है। कुसुम इम्पोरियम के माध्यम से लाह मूल्य संवंर्द्धन योजना के तहत लाह चूड़ी व हस्तशिल्प, बटन लैक एवं लैक सीलिंग स्टिक का भी व्यवसाय किया जा रहा है विशेषकर लैक सीलिंग स्टिक निर्वाचन एवं फोरेन्सिक लैब में इसकी नियमित आपूर्ति सफलतापूर्वक की जा रही है। बटन लैक की आपूर्ति लाह चूड़ी से जुड़े कारीगारों को बाजार से कम दर पर नियमित रूप से उपलब्ध कराया जा रहा है।

राज्य के हुनरमंद कारीगारों के लिए कुसुम इम्पोरियम से जुड़ने का एक सशक्त मंच है इसके लिए झारखंड का कारीगार होना जरूरी है। कुसुम इम्पोरियम के माध्यम से कारीगारों/उत्पादकों द्वारा निर्मित उत्पादों की गुणवता एवं आपूर्ति क्षमता का आकलन के पश्चात कारीगारों अथवा समूह को सूचीबद्ध किया जाता है। वर्तमान में कुसुम इम्पोरियम से लगभग 80 कारीगार/उत्पादक समूह सूचीबद्ध हैं जिनके माध्यम से उत्पादों के संग्रहण का कार्य किया जा रहा है, जिसमें पलासमार्ट से जुड़े उत्पादक समूह, विकास भारती इत्यादि प्रमुख संस्थाऐं भी जुड़ी हुई है। साथ ही सरकारी एवं अर्द्धसरकारी विभागों में कुसुम इम्पोरियम के माध्यम से माँग के अनुरूप इन उत्पादों की आपूर्ति की जा रही है।

झास्कोलैम्पफ कुसुम इम्पोरियम के माध्यम से राज्य के हुनर कारीगारों/शिल्पकारों/ उत्पादकों को लाभप्रद बाजार उपलब्ध कराने हेतु कटिबद्ध एवं प्रयत्नशील है।

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस, 100 वर्षों का सफर

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस हर साल जुलाई महीने के पहले शनिवार को मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को मिलजुल कर कार्य करने के लिए जागरूक करना है।

1895 में अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (ICA) का गठन किया गया था, 1927 से जुलाई के पहले शनिवार को सहकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि दुनिया भर में सहकारी समितियों के योगदान को उजागर किया जा सके। सहकारिताएं जन–केंद्रित उद्यम हैं जिनका स्वामित्व, नियंत्रण और संचालन उनके सदस्यों द्वारा उनकी सामान्य आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। 2021 वर्ष का उत्सव संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त सहकारिता का 27वां अंतरराष्ट्रीय दिवस और 99वां अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस था।

इतिहास

सहकारी का सबसे पहला रिकॉर्ड फेनविक, स्कॉटलैंड से आता है, जहां 14 मार्च, 1761 में, एक बमुश्किल सुसज्जित कुटीर में स्थानीय बुनकरों ने फेनविक वीवर्स समाज के नेतृत्व में जॉन वॉकर के सफेदी वाले सामने के कमरे में दलिया की एक बोरी को छूट पर बेचना शुरू कर दिया था।

1844 में इंग्लैंड के उत्तर में रोशडेल शहर में कपास मिलों में काम करने वाले 28 कारीगरों के एक समूह ने पहला आधुनिक सहकारी व्यवसाय रोचडेल इक्विटेबल पायनियर्स सोसाइटी की स्थापना की, जिसे रोशडेल पायनियर्स के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें आधुनिक सहकारी समिति के आदर्श और सहकारी आंदोलन के संस्थापक के रूप में माना जाता है।

2021 के लिए थीम

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस 3 जुलाई को एक साथ बेहतर पुनर्निर्माण के रूप में वर्चुअल मोड पर मनाया गया था। दुनिया भर की सहकारी समितियों ने दिखाया कि कैसे वे एकजुटता और लचीलेपन के साथ कोविड–19 महामारी संकट का सामना कर सकती हैं और समुदायों को एक जन–केंद्रित और पर्यावरण की दृष्टि से ठीक होने में अपनी भूमिका निभा सकती हैं।

वर्ष 2022 में 2 जुलाई को पहला शनिवार अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के रूप में मनाया जायेगा चह 100 वां अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस है।

इस वर्ष का थीम है – **'एक आत्मनिर्भर भारत और बेहतर विश्व' (Co-operatives Build an Atmanirbhar Bharat and a Better World)**

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस का महत्व

इस दिन का महत्व जनता के बीच सहकारी समितियों और समाज और दुनिया में उनके योगदान के बारे में जागरूकता लाना है। इसके अलावा यह दिन अंतरराष्ट्रीय सहकारी आंदोलन और अन्य अभिनेताओं के बीच साझेदारी को मजबूत और विस्तारित करने के लिए भी है।

वैश्विक सहकारी नेटवर्क

125 वर्षों से भी अधिक समय से 112 देशों के कुल 318 संगठन अंतरराराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन के सदस्य हैं। इसके अलावा आईसीए के सदस्य अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों, अर्थात् कृषि, बैंकिंग, उपभोक्ता, मत्स्य पालन, स्वास्थ्य, आवास, बीमा, और उद्योग और सेवाओं से अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सहकारी संगठन हैं। यह सबसे पुराने गैर–सरकारी संगठनों में से एक है और प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों की संख्या के आधार पर सबसे बड़े संगठनों में से एक है। इसके 1 अरब सहकारी सदस्य हैं।

सहकारिता आंदोलन

सहकारिता स्वायत्त संघ और उद्यम हैं जिनके माध्यम से नागरिक स्वेच्छा से अपने समुदाय और राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उन्नति में योगदान देकर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए एकजुट हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया भर में लगभग तीस लाख से भी ज्यादा सहकारी समितियों में दुनिया की आबादी का 12 प्रतिशत शामिल है और दुनिया भर में 28 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार देता है।

निबंधक की कलम से

सहकारिता की शुरुआत गरीब किसानों, मजदूरों आदि को बिचौलियों, साहूकारों एवं सूदखोरों आदि से छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से की गयी थीं। आज भारतीय सहकारी आंदोलन विश्व का सबसे बड़ा आंदोलन है। देश में 10 लाख से अधिक सहकारी समितियां निबंधित हैं जिनमें 30 करोड़ से अधिक सदस्य हैं इनमें से 48 प्रतिशत समितियां कृषि एवं कृषि कार्य से संबंधित हैं। झारखण्ड राज्य में भी सहकारिता की जड़ें काफी गहरी है तथा राज्य की शत प्रतिशत पंचायतें सहकारिता से आच्छादित हैं। राज्य में निबंधित 10 हजार से अधिक सहकारी समितियों के लगभग 21 लाख सदस्य हैं जो मुख्यतः किसान, मजदूर, बुनकर, दुग्ध उत्पादक, मछली पालक या अन्य छोटे मोटे कार्य करते हैं। इन सदस्यों में से 70 प्रतिशत से ज्यादा लोग सीधे कृषि एवं वनोत्पाद से संबंधित कार्यों से जुड़े हैं।

सहकारिता निजी एवं सरकारी क्षेत्र के मध्य संतुलन का एक मजबूत कारक है। सरकारी संस्थाएं सरकार के नियंत्रण में चलती हैं, निजी संस्थाओं में निर्णय उनके मालिक आदि लेते हैं वहीं सहकारी क्षेत्र में नियंत्रण लोगों के हाथ में होता है, चाहे वो किसान हों मजदूर हों, या जिस प्रकार की समिति है उस कार्य में लगे उसके सदस्य हों। छोटे, सीमांत, मझोले किसानों, मजदूरी कर किसी तरह अपने परिवार को पालते किसी मजदूर अथवा किसी व्यवसाय अथवा व्यापार से व्यापारियों की जिंदगी बदलने, उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रुप से सशक्त बनाने की ताकत सहकारिता के माध्यम से ही संभव है।

सहकारी समितियों को अपने परंपरागत कार्य के साथ साथ व्यवसाय के हर क्षेत्र से जुड़ना होगा। मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं उससे जुड़े अन्य कार्य से जुड़े कृषकों को तब तक नहीं मिलेगा जब तक वे खुद को केवल उत्पादन तक सीमित रखेंगे। सहकारी समितियों के आज के इस तकनीकि प्रधान युग में स्वंय को भी तकनीकि से युक्त करना होगा। उन्हें अपने उत्पाद का भंडारण, प्रसंस्करण एवं विपणन भी स्वयं करना होगा सहकारी समितियों को इनपुट देने वाले अपने परंपरागत कार्य के अलावा उत्पादों की ग्रेडिंग, सही भंडारण, उनके परिस्करण, परिवहन, विपणन जैसे कार्यों को अपनी कार्यसूची में प्राथमिकता देनी होगी।

इन्ही बातों को ध्यान में रखकर राज्य में सहकारी समितियों को सशक्त बनाने की कार्रवाई की जा रही है। अच्छा कार्य कर रहे लैम्पस/पैक्स को उनके कार्य के अनुसार A, B, C, D श्रेणी में बांटते हुए कंम्प्यूटर, प्रिंटर जैसी सुविधाओं से युक्त किया जा रहा है, समितियों में भंडारण क्षमता में वृद्धि हेतु प्रत्येक पंचायत में गोदामों का निर्माण किया जा रहा है। समितियों को व्यवसायिक कार्यों हेतु बड़े पैमाने पर कार्यशील पूंजी उपलब्ध करायी जा रही है। फलों सब्जियों एवं वनोत्पाद आदि के सुरक्षित रखरखाव हेतु राज्य के सभी जिलों में 5000 एम०टी क्षमता के कोल्ड स्टोरेज का निमोण कार्य इसके अलावा 30 एम0टी0 के कोल्ड रुम तथा पर्यावरण कि लिये सुरक्षित 5 एम0टी के सोलर कोल्ड रुम का निर्माण कराया जा रहा है। कृषकों को बेहतर एवं आधुनिक तकनीक से खेती की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से उपकरण बैंक की स्थापना की जा रही है। वेजफेड के माध्यम से फल सब्जी के विक्रय हेतु प्रखण्डों में रिटेल आउटलेट बनाये जा रहे हैं, परिवहन में सुविधा हेतु फल सब्जी उत्पादक सहयोग समितियों को पिक अप वैन दिये गये हैं।

इसी प्रकार वनोत्पाद, मत्स्य, डेयरी, पॉल्ट्री आदि से संबंधित शीर्ष स्तरीय फेडरेशन के कार्यों को और अधिक जनउपयोगी बनाया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक संबंधित समितियों एवं उसके सदस्यों को लाभ मिले।

सभी सहकार भाईयों से अनुरोध है कि ''मैं'' से उपर उठते हुए ''हम'' बनें और सहकारिता के आदर्श वाक्य "सब के लिए एक, एक के लिए सब'' को चरितार्थ करें।

शुभ कामनाओं सहित

मृत्युंजय कुमार बरणवाल
निबंधक

सहकारी आंदोलन का प्रतीक इंद्रधनुषी ध्वज

1921 से अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन द्वारा आमतौर पर अपने आंदोलन के दौरान पहली बार इंद्रधनुषी रंग के झंडे का इस्तेमाल किया गया था। सात रंगों वाला यह झंडा अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन का सामान्य प्रतीक था।

स्विट्जरलैंड के बासेल में विश्व के बड़े सहकारी नेताओं के द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय सहकारी कांग्रेस का आयोजन कर दुनिया भर की सहकारी समितियों को एकजुट करने में मदद हेतु एक सम्मेलन किया गया था। सहकारी आंदोलन के सामान्य मूल्यों एवं आदर्शों को पहचानने और परिभाषित करने वाले इस सम्मेलन में एक सतरंगे झंडे का सहकारिता के प्रतीक के रुप में इस्तेमाल किया गया था।

प्रसिद्ध फ्रांसिसी कोओपरेटर प्रोफेसर चार्ल्स गिड द्वारा कुछ प्रयोगों के साथ डिजाईन किये गये इस सतरंगे ध्वज का उपयोग 1923 में प्रथम विश्व सहकार दिवस के आयोजन के दौरान किया गया। श्री गिड के अनुसार इंद्रधनुष विविधता में एकता, प्रकाश, ज्ञान, प्रगति और शक्ति का प्रतीक है।

1925 में यह इंद्रधनुषी ध्वज अंतर्राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन के आधिकारिक प्रतीक के रुप में अपनाया गया।

इंद्रधनुष की तरह यह झंडा आशा और शांति का प्रतीक है। सहकारी ध्वज में सात रंगों में से प्रत्येक को निम्नलिखित अर्थ दिया गया है:

लाल : साहस का प्रतीक है

नारंगी : संभावनाओं की दृष्टि प्रदान करता है

पीला : उस चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है

हरा : सदस्यता के विकास और सहयोग के उद्देश्यों और मूल्यों की समझ के लिए एक चुनौती का संकेत देता है

हल्का नीला : दूर क्षितिज, शिक्षा प्रदान करने और कम भाग्यशाली लोगों की मदद करने और वैश्विक एकता की ओर प्रयास करने की आवश्यकता का सुझाव देता है।

गहरा नीला : निराशा को समाप्त कर सहयोग के माध्यम से सफल होने का संकेत देता है : एक अनुस्मारक कि कम भाग्यशाली लोगों की जरूरतें हैं जिन्हें सहयोग के लाभों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

बैंगनी : गर्मजोशी, सुंदरता और दोस्ती का रंग है।

> **सहकारिता आधारित आर्थिक विकास मॉडल बहुत प्रासंगिक है।**
> **इस मॉडल में प्रत्येक सदस्य की जवाबदेही और जिम्मेवारी होती है।**

सहकारिता की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ

(1) सहकारिता संगठन द्वारा आत्म–सहायता को प्रभावपूर्ण बनाने की विधि है।

(2) सहकारिता उत्पादन एवं वितरण की क्रियाओं में प्रतियोगिता एवं सभी प्रकार के मध्यस्थों को हटाना है।

(3) सहकारिता संगठन का वह स्वरूप है जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार समानता के आधार पर मनुष्य की हैसियत से अपने आर्थिक हितों में वृद्धि हेतु संगठित होते हैं।

(4) सहकारिता सामाजिक संगठन की एक पद्धति है जो एकता, मितव्ययिता, लोकतन्त्र, न्याय एवं स्वतन्त्रता पर आधारित है। सहकारिता स्वयं का अपना जीवनदर्शन है। यह मनुष्य को स्वार्थपरता से सार्वजनिक सेवा की ओर ले जाती है। प्रतियोगिता का अन्त कर पारंपरिक सहयोग से व्यक्ति अपने स्वयं के संगठन एवं मेल द्वारा आर्थिक क्रियाओं का संचालन करने लगते है।

कोल्ड रुम; छोटे एवं मझोले कृषकों के लिए वरदान हैं

राज्य में उत्पादित होने वाली 50 लाख मेट्रिक टन सब्जियों में 32 लाख मेट्रिक टन सब्जियों का उपयोग स्थानीय स्तर पर होता है। स्थानीय स्तर पर गाँव देहात के विभिन्न स्थानों साप्ताहिक हाट बाजार हटिया इत्यादि लगते हैं जहाँ पर आसपास के छोटे किसान सुबह अपने खेतों से सब्जी फल इत्यादि तोड़ कर उन्हें टोकरी या बोरे आदि में लाकर बेचते हैं। सुबह से शाम तक में जितने उत्पाद बिकते हैं उसके बाद बची सब्जियों फलों आदि को वापस ले जाने या औने पौने दाम पर बेचना या फिर मजबूरी में उसे फेंकना के अलावा उनके पास और कोई रास्ता नहीं रहता है। इससे इन किसानों को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

किसानों के हित में सहकारिता विभाग द्वारा कदम उठाते हुए राज्य के जिन प्रखंडों में नाशपाती, टमाटर एवं अन्य सब्जियां, लाघुवानोत्पद तथा जल्दी खराब होने वाले उत्पादों की खेती होती है वैसे स्थानों के लैम्पस/पैक्सों में 139 कोल्ड रूम का निर्माण कराया गया है जिनकी क्षमता 30 – 30 मेट्रिक टन है। ये कोल्ड रूम परम्परागत बिजली से चलने वाले कोल्ड रूम में बिजली की उपलब्धता एवं वैकल्पिक रूप में जनरेटर से भी संचालित होते हैं।

राज्य के कई सुदूरवर्ती गाँव में अभी भी विद्युतीकरण के आभाव में है साथ ही नियमित विद्युत् आपूर्ति के कारण भी कई बार एक परेशानी हो जाती है। इन सब बातों के अलावा प्रकृति के पर्यावरण संतुलन को ध्यान में रखते हुए सहकारिता विभाग ने नयी पहल करते हुए सौर उर्जा संचालित कोल्ड रूम के निर्माण की योजना बनाते हुए इसपर कार्य किया।

सूर्य से सीधे प्राप्त होने वाली ऊर्जा में कई खास विशेषताएं हैं। जो इस स्रोत को आकर्षक बनाती हैं। इनमें इसका अत्यधिक विस्तारित होना, अप्रदूषणकारी होना व अक्षु.ण होना प्रमुख है ।

राज्य के सब्जी उत्पादक ग्रामीण इलाकों के लैम्पस एवं पैक्सों में 5 एम0टी0 क्षमता वाले एकोफ्रोस्ट टेक्नोलॉजी से निर्मित 57 सोलर कोल्ड रूम के निर्माण किया जा रहा है। वर्तमान वित्तीय वर्ष 2022–23 में 5 – 5 मेट्रिक टन के 60 नए सोलर कोल्ड रूम के निर्माण की योजना है ।

विशेष – आवश्यकता होने पर इन कोल्ड रूम को दूसरे स्थानों में भी शिफ्ट किया जा सकता है ।

इन कोल्ड रुम का संचालन बेहद आसान है। लैम्पस /पैक्स इन कोल्ड रुम का इस्तेमाल कुछ सावधानियों के साथ करके अपने तथा अपने क्षेत्र के कृषकों की विषेषकर सब्जी एवं फल उत्पादक छोटे किसानों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

सावधानियां:–

- उपज को साफ रखें तथा उनक सही प्रकार के क्रेट में ग्रेड, सॉर्ट और पैक करें।
- रोगग्रस्त उत्पाद, मलबा और मिट्टी के कणों को अलग किया जाना चाहिए तथा उपज गीली होने पर उनका भण्डारण नहीं करना चाहिए।
- क्रेट को सीधे कूलिंग फैन के सामने ना रखें, दीवार से 10 से0मी0 की दूरी रखें तथा क्रेटों के बीच 5 से0मी0 की जगह रखें।
- उपज को कृषि उपज के प्रकार के आधार पर भण्डारण करें।
- क्रेटों को इष्टतम स्तर पर भरा जाना चाहिए ताकि संग्रहित उत्पादों के अंदर वायु प्रवाहित हो सके।
- हर दो दिन के बाद भंडारित उपज की जांच अवश्य करें।
- दैनिक आधार पर तापमान एवं आद्रता की जांच करें।
- खुली धूप की स्थिति में उपज को सीधे स्थानांतरित करने से बचें, पहले उपज को कोल्ड रुम से छाया क्षेत्र में30 मिनट से 2 घंटे तक स्थानांतरित करें।
- छरवाजों का खुलना कम से कम होना चाहिए तथा कोल्ड रुम के अंदर का भाग स्वच्छ एवं साफ रखें।

फल सब्जी विपणन हेतु रिटेल आउटलेट का निर्माण

वेजफेड, झारखण्ड राज्य का शीर्ष सहकारी संस्था (संघ) है, जिसका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण झारखण्ड राज्य है। राज्य के विभिन्न जिलों से 510 सम्बद्ध लैम्पस/पैक्स/फल सब्जी उत्पादक सहकारी समितियों के माध्यम से लाखों कृषक वेजफेड से जुड़े हुए हैं। वेजफेड का उद्देश्य सम्बद्ध सहकारी समितियों के माध्यम से फल सब्जी एवं अन्य कृषि उत्पादों का आधुनिक तकनीक से विकास, संरक्षण एवं प्रसंस्करण तथा मूल्य संवर्द्धन एवं विपणन हेतु बाजार उपलब्ध कराना तथा कृषकों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है।

राँची शहर के विभिन्न वार्डो तथा अन्य जिलों के जिला मुख्यालयों एवं प्रखण्ड मुख्यालयों में रिटेल आउटलेट का निर्माण एवं संचालन करने का कार्य वेजफेड द्वारा किया जा रहा है।

वेजफेड द्वारा प्रथम चरण में वित्तीय वर्ष 2020–21 के अन्तर्गत 22 रिटेल आउटलेट तथा द्वितीय चरण में वित्तीय वर्ष 2021–22 में 25 रिटेल आउटलेट के माध्यम से बिचौलियामुक्त श्रृंखला का निर्माण करते हुए राज्य के कृषकों द्वारा उत्पादित फल सब्जी एवं कृषि उत्पादों को उचित मूल्य पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराने की योजना कार्यान्वित की गई है।

प्रस्तावित रिटेल आउटलेट स्वच्छ एवं आधुनिक किस्म के हैं, जिसमें निम्नलिखित अवयव हैं :

1. **Light Weight Structure (Pre Fabricated)**
2. **False Ceiling & Electrification**
3. **Vitrified Tile Flooring**
4. **Fruit & Vegetable Display System**
5. **Air Conditioning**
6. **Freezing Unit**
7. **Shopping Rack**
8. **Vegetable Weighing Machine**
9. **Signage**

तृतीय चरण में प्रस्तावित 25 रिटेल आउटलेट हेतु संबंधित जिले के उपायुक्त एवं अंचलाधिकारियों द्वारा कुछ में भूमि उपलब्ध करा दी गई है तथा शेष उपलब्ध कराई जा रही है।

रिटेल आउटलेट कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित तथ्य महत्वपूर्ण हैं :

- रिटेल आउटलेट का निर्माण उपायुक्त एवं अंचलाधिकारियों द्वारा उपलब्ध कराए गए भूखण्ड पर प्रथम एवं द्वितीय चरण की भाँति निविदा के माध्यम से वेजफेड द्वारा कराया गया है ताकि उसमें कोई अनियमितता ना हो।
- योजनान्तर्गत निर्माण कार्य से संबंधित सभी तकनीकी कार्य समेकित सहकारी विकास परियोजना कोषांग, राँची के तकनीकी कोषांग की सहायता से निष्पादित किये जा रहे हैं।
- रिटेल आउटलेट का संचालन वेजफेड से सम्बद्ध सहकारी समितियों के माध्यम से किया जा रहा है।
- सहकारी समितियों का चयन दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित इच्छा के अभिव्यक्ति के माध्यम से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर वेजफेड के व्यवसाय उप समिति–सह–निविदा समिति द्वारा किया जा रहा है तथा उन्हें आउटलेट दिये जा रहे हैं।
- संचालन हेतु समितियों के चयन में योग्य एवं स्थानीय समितियों को प्राथमिकता दी जा रही है।
- वेजफेड द्वारा निर्मित रिटेल आउटलेट के सुचारू रूप से संचालन की सतत् निगरानी एवं अनुश्रवण संबंधित जिला के जिला सहकारिता पदाधिकारी एवं वेजफेड द्वारा लगातार की जा रही है।
- तृतीय चरण में वेजफेड द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों के मुख्य स्थलों पर 25 इकाई रिटेल आउटलेट निर्माण की योजना है। भविष्य में राज्य के सभी जिला मुख्यालयों एवं प्रखण्ड मुख्यालय में रिटेल आउटलेट का निर्माण किया जाना है।
- प्रति इकाई रिटेल आउटलेट निर्माण योजना की कुल लागत :– मो0 17,48,400.00 (सतरह लाख अड़तालीस हजार चार सौ) रूपए।

इस योजना के माध्यम से बिचौलिया प्रणाली को समाप्त करने में सहायता होगी तथा कृषकों को Distress Sale से मुक्ति मिलेगी तथा आय में वृद्धि होगी।

नई सदी का यह है विश्वास, सहकारिता से होगा विकास

सहकारिता में महिलाओं की भूमिका

सहकारिता एक आन्दोलन है। आन्दोलन सह अस्तित्व का, आन्दोलन सहकर्म का, आन्दोलन सहयोग का, आन्दोलन सहभाग का, आन्दोलन सामूहिक जिम्मेदारी का, आन्दोलन सामूहिक बहुमुखी विकास का एवं आन्दोलन गरीबी तथा बेरोजगारी उन्मूलन का।

इस प्रकार सहकारिता व्यक्ति के लिए जीने हेतु जीवन शैली है, जीने की रीति एवं नीति है इसे जीवन प्रबंध भी कह सकते हैं। सब एक के लिए व एक सबके लिए अर्थात इससे एक होकर साथ–साथ चलने एवं जीने की भावना का विकास होता है।

महिलाओं की भूमिका

किसी भी समाज एवं देश यहां तक कि व्यक्ति के विकास में भी महिलाओं कि अहम भूमिका एवं सहयोग होता है। व्यक्ति की उत्पत्ति भी बिना महिला के असम्भव है। सहयोग, सहकर्म एवं सह अस्तित्व की प्रथम पाठशाला परिवार है। परिवार का मेरुदंड महिलाएं हैं जो सहकारिता पर टिकी हुई हैं अतः जब तक महिलाओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त नहीं होगा, सहकारिता आन्दोलन की सफलता दिवा–स्वप्न ही बनी रहेगी। सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं के सक्रिय सहयोग से न सिर्फ समाज एवं देश का विकास होगा बल्कि महिला समाज के सर्वांगीण उत्थान के साथ–साथ सहकारिता आन्दोलन को भी शक्ति, गति एवं दिशा प्रदान की जा सकती है।

भारतीय समाज में महिलाओं की सूझबूझ, कर्तव्य परायणता, ईमानदारी, त्याग, बलिदान, बहादुरी, प्रशासनिक क्षमता, संगठनात्मक क्षमता, परिश्रम करने कि क्षमता हर क्षेत्र में प्रमाणित हो चुकी है। किसी भी क्षेत्र में महिलाओं कि अक्षमता को आंकना बेईमानी होती। विश्लेषकों का कहना है कि भारत में सहकारिता असफल हुआ है। इसका मुख्य कारण है भारतीय सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं के सक्रिय सहयोग का अभाव। इस क्षेत्र में महिलाओं कि भूमिका बिलकुल ही असंतोषप्रद है। भारत में जितने भी प्रकार की सहकारी समितियाँ बनी हैं उनमें महिलाओं की सहकारी समितियाँ लगभग 2% ही हैं। जबकि महिलाओं की आबादी लगभग 50% है। इससे सिद्ध होता है कि सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी लगभग नगण्य या बिलकुल ही कम है। **झारखंड मे महिलाओ के लिए सहकारी समितियों की प्रबंध पर्षद में 50% आरक्षण का प्रावधान हैं।**

विशेषज्ञों का कहना है कि सहकारिता को निश्चित रूप से सफल बनाना है। बेरोजगारी एवं गरीबी दूर करने हेतु तथा समाज को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने हेतु सहकारिता के समान कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। देश एवं समाज तथा महिलाओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति के उत्थान हेतु सहकारिता आन्दोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। पुरुषों के साथ महिलाओं को भी जीवन के हर क्षेत्र में समानता का अधिकार देना समय की पुकार है। किसी भी देश का विकास सिर्फ पुरुषों के सहयोग से ही होना सम्भव नहीं है। पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं का सहयोग आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है, अन्यथा विकास अधूरा ही होगा।

हमारे देश कि महिलाओं में भी वे सभी क्षमता हैं जो सहकारिता आन्दोलन के लिए आवश्यक है। इसके लिए निम्नांकित प्रयास किया जाना अपेक्षित है :–

- सभी शैक्षणिक संस्थाओं में सहकारी शिक्षा का प्रावधान किया जाए जिससे पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं में भी सहकारिता ज्ञान एवं भावना का विकास होगा।
- विभिन्न प्रकार कि सहकारी समितियों में महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाए।
- बाजारों में प्राथमिकता के आधार पर सहकारी दुकानें आवंटित की जाएं।
- महिला सहकारी बैंक तथा साख समितियाँ गठित की जाएं एवं ऋण प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।
- सहकारिता में महिलाओं कि भागीदारी बढ़ाने हेतु तथा इसमें आनेवाली समस्याओं को निदान हेतु सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, सहकारी समिति एवं अन्य केन्द्रीय तथा शीर्ष सहकारी संस्थान स्तर पर महिलाओं का सम्मेलन, सेमिनार एवं कार्यशाला आयोजित की जाए।
- सहकारी समितियों में महिलाओं को अधिक–से–अधिक रोजगार का प्रावधान उपलब्ध कराकर उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को बढ़ाया जा सकता है।

सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास सम्भव हो सकेगा। नेतृत्व की शक्ति, नियोजन तथा सहकारिता सेवाओं तक पहुचंने का अवसर महिलाओं को प्राप्त हो सकेगा।

सहकारी समिति के माध्यम से उनकी श्रम शक्ति, उत्पादन क्षमता एवं योग्यता का बेहतर ढंग से उपयोग करके उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाया जाना संभव हो सकेगा।

झारखण्ड राज्य सहकारी मत्स्य संघ लि०
(झास्कोफिश)

डोरण्डा रांची स्थित बटन तालाब अवस्थित झास्कोफिश राज्य के मत्स्यजीवी सहयोग समितियों की एक राज्य स्तरीय शीर्ष सहकारी संस्था है। जिसका निबंधन झारखण्ड राज्य सहकारिता अधिनियम 1935 के तहत् किया गया है। संघ की अधिकृत हिस्सा पूँजी मो0–50,00,00,000/–(पचास करोड़) रू0 है।

झास्कोफिश के निदेशक पर्षद में निदेशकों की अधिकतम संख्या 21 है। इसमें निर्वाचित सदस्यों की संख्या 05 है तथा राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्यों की संख्या 04 है। विभिन्न विभागों यथा कल्याण विभाग, जल संसाधन विभाग, वित्त विभाग, उद्योग विभाग तथा ऊर्जा विभाग के प्रधान सचिव/सचिव निदेशक पर्षद के पदेन सदस्य होते हैं। झास्कोफिश के निदेशक पर्षद का चुनाव माह दिसम्बर 2017 में हुआ है।

सहकारिता देश के सामाजिक–आर्थिक ढांचे की रीढ़ है, यह एकमात्र ऐसा मॉडल है जो समावेशी विकास लाता है।

प्राथमिक मत्स्यजीवी सहयोग समितियां झास्कोफिश की सदस्य होती हैं तथा वर्तमान में राज्य की 277 प्राथमिक मत्स्य जीवी सहयोग समितियां इसकी सदस्य हैं। संघ का लक्ष्य है राज्य की शतप्रतिशत समितियों को अपने से संबंद्धता प्रदान करना तथा इसके लिए उन्हे उत्प्रेरित करने का कार्य किया जा रहा है। ।

प्राथमिक मत्स्यजीवी सहयोग समितियों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से संघ द्वारा निम्न कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर कराने की कार्रवाई की जा रही है–

- मत्स्य एवं मत्स्य बीज के उत्पादन में बढ़ोतरी हेतु तकनीकी सहायता देना।
- मत्स्य कृषकों को प्रशिक्षण देकर मत्स्य पालन में कौशल निपुण करना।
- मत्स्यजीवी सहयोग समितियों को उनके आवश्यकतानुरूप सम्पत्ति (मत्स्य पालन से संबंधित सामग्री जैसे–जाल, डीप फ्रीजर, पिक अप वैन, टेबल कुर्सी, इलेक्ट्रोनिक बैंलेस इत्यादि) उपलब्ध कराकर उनके आधार भूत संरचना का विकास करना।
- फिशफीड (मत्स्य आहार) का उत्पादन कर मत्स्य कृषकों को अनुदानित दर पर उपलब्ध कराना।
- मत्स्यजीवी सहयोग समितियों के लिए कार्यालय शेड/मत्स्य बिक्री केन्द्र उपलब्ध कराना।

पूर्व में रांची शहर के मध्य में महात्मा गांधी मार्ग (मेन रोड) में एक बड़ा मछली बाजार लगता था जिसके कारण ना सिर्फ उस क्षेत्र के आसपास रहने वाले नागरिकों को परेशानी होती थी बल्कि मछली का व्यवसाय करने वाले लोगों को भी स्थानाभाव आदि के कारण बहुत समस्याओं का सामना करता पड़ता था। इस बात को ध्यान में रखते हुए रांची के एच0ई0सी0 सेक्टर 2 में आधुनिक सुविधाओं से युक्त तथा पर्यावरण एवं स्वास्थ्य इत्यादि को ध्यान में रखते हुए एक आधुनिक मछली बाजार का निर्माण कराया गया तथा आज उसे झास्कोफिश के माध्यम से सफलता पूर्वक संचालित किया जा रहा है।

इसी प्रकार हटिया जलाशय में अधिष्ठापित केजों में वहां की स्थानीय पतराटोली मत्स्यजीवी सहयोग समिति लि0 के सदस्यों के माध्यम से मत्स्यपालन का कार्य कराया जा रहा है।

झास्कोफिश का मुख्य उद्देश्य मत्स्यजीवी सहयोग समितियों को सुदृढ़ करना एवं उनके तकनीकी क्रियाकलापों को परिस्कृत कर मछली उत्पादन को बढ़ावा देकर उन्हे और उनके सदस्यों को आर्थिक रुप से स्वावलंबी बनाना।

प्रधान सम्पादक : मृत्युंजय कुमार बरणवाल, निबंधक, स0 स0, झारखण्ड **सम्पादक :** जय प्रकाश शर्मा, उप निबंधक, स0 स0
सम्पादकीय सहयोग : राकेश कुमार सिंह, स0 नि0, कुमोद कुमार, स0 नि0
निबंधक, सहयोग समितियाँ, झारखण्ड, राँची द्वारा प्रकाशित एवं अन्नपूर्णा प्रेस एण्ड प्रोसेस, राँची द्वारा मुद्रित।
पता : तृतीय तल, पशुपालन एवं सहकारिता भवन, हटिया - 834004, दूरभाष : 0651-2290444
e-mail : jharkhand.coopregistrar@gmail.com, website : cooperative.jharkhand.gov.in